“प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ” का क्या अर्थ है?
(श्रेष्ठगीत 2:7)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रश्न: सुलैमान का यह कथन “प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ जब तक कि वह स्वयं न चाहे” का क्या अर्थ है?

श्रेष्ठगीत 2:7 (ESV)

मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, हे यरूशलेम की कन्याओं,
हिरणों या मैदान की हरणियों के द्वारा, प्रेम को उत्तेजित न
करो और न जगाओ जब तक कि वह स्वयं न चाहे।

उत्तर:
लेखक असली प्रेम के विकास के बारे में वास्तविक ज्ञान साझा कर रहे हैं। वे उन सभी को चेतावनी दे रहे हैं जो प्रेम की तलाश में हैं, ताकि वे इसे जल्दबाज़ी में न अपनाएँ और बाद में पछताएं।

यह पद दो प्रकार के संबंधों के लिए है:

1. शारीरिक संबंध (पुरुष और महिला के बीच)
2. आध्यात्मिक संबंध (मसीह और उसकी कलीसिया के बीच)

जब सुलैमान कहते हैं, “मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, हे यरूशलेम की कन्याओं…”, तो वे कलीसिया या किसी भी व्यक्ति को

“प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ” का क्या अर्थ है?
(श्रेष्ठगीत 2:7)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

संबोधित कर रहे हैं जो प्रतिबद्ध संबंध में प्रवेश करना चाहता है।

वे आगे कहते हैं: “हिरणों या मैदान की हरणियों के द्वारा…” यहाँ वे इन जंतु के नाम पर प्रतिज्ञा ले रहे हैं। पुराने नियम में लोग अक्सर ईश्वर के नाम पर प्रतिज्ञा लेते थे, लेकिन सुलैमान इन सौम्य और सजग जीवों का उदाहरण देते हैं।

इन जानवरों की विशेषताएँ:

सौम्य और सतर्क
आसानी से घबराने वाले और शर्मीले
तेजी से भाग जाने वाले
यदि भाग जाएँ तो पकड़ना कठिन

सही प्रेम भी इसी तरह धैर्य की मांग करता है। यदि आप इसे जल्दी में मजबूर करेंगे, तो यह आपके हाथ से निकल जाएगा—जैसे किसी दौड़ती हरण को जबरदस्ती पकड़ने की कोशिश।

इसलिए निर्देश है:

“प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ जब तक कि वह स्वयं न

“प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ” का क्या अर्थ है?
(श्रेष्ठगीत 2:7)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

चाहे।”

दूसरे शब्दों में, जब आप प्रेम को जल्दी से भड़काते हैं, तो आप उसे खो सकते हैं। धीरे-धीरे और सम्मानपूर्वक इसे अपनाना इसे स्वाभाविक रूप से विकसित होने देता है।

शारीरिक संबंधों में, यह सिखाता है कि सच्चा प्रेम समय के साथ बनता है—not जल्दबाज़ी में। कई युवा लोग जल्दी रिश्तों में कूद जाते हैं, कभी-कभी कुछ ही हफ्तों में विवाह कर लेते हैं। बाद में, जब वे अपने साथी के चरित्र को समझते हैं, तो उन्हें पछतावा होता है। कारण यह है कि उन्होंने प्रेम को अपने समय पर विकसित होने नहीं दिया।

आध्यात्मिक संबंधों में, प्रभु हमें उनके और उनके भक्तों के बीच के प्रेम के बारे में सिखाते हैं। मसीह के प्रति स्थायी प्रेम तब बनता है जब हम उनके साथ समय बिताते हैं, उनके चरित्र को समझते हैं और उनकी उपस्थिति में रहते हैं—पवित्रशास्त्र, प्रार्थना और आराधना के माध्यम से। जो लोग इन अभ्यासों में समय देते हैं, वे मसीह के प्रति गहन और स्थायी प्रेम अनुभव करते हैं।

इसके विपरीत, जो व्यक्ति यीशु से केवल इसलिए प्रेम करता है

“प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ” का क्या अर्थ है?
(श्रेष्ठगीत 2:7)

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

क्योंकि उसने रोग ठीक किया, व्यापार में सफलता दी, किसी विशेष जगह में प्रकट हुआ, या सामाजिक दबाव के कारण, वह उसी तरह है जैसे दौड़ती हरण को जबरदस्ती पकड़ने की कोशिश करना—अंततः वह प्रेम खो देगा। ऐसा प्रेम अस्थायी होता है; परिस्थितियाँ बदलते ही हृदय भटक सकता है और पछतावा उत्पन्न होता है।

सबक: अपने प्रेम को अचानक घटनाओं या सतही अनुभवों पर न बनाएं। प्रेम को धीरे-धीरे, समय के साथ, और स्थायी संबंधों में बनाएं। तभी यह मजबूत और टिकाऊ होगा।

श्रेष्ठगीत 2:7 (ESV)

मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, हे यरूशलेम की कन्याओं,
हिरणों या मैदान की हरणियों के द्वारा, प्रेम को उत्तेजित न करो और न जगाओ जब तक कि वह स्वयं न चाहे।

प्रभु आपको आशीर्वाद दें। इस सुसमाचार को दूसरों के साथ साझा करें।

Share on:
WhatsApp